

भाकृअनुप-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

प्रथम प्रमुख कृषि सलाह (1-15 नवम्बर, 2026) भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बुवाई और अन्य प्रथाएँ फसल मौसम 2026-27

किसानों को सलाह दी जाती है कि वे अपने क्षेत्र के लिए अनुशंसित बुवाई अवधि के अनुसार नवम्बर के प्रथम पखवाड़े में गेहूँ एवं जौ की बुवाई करें। समान रूप से फसल अंकुरण और अधिक उपज सुनिश्चित करने के लिए बुवाई के समय, कृषि-जलवायु परिस्थितियों तथा सिंचाई की उपलब्धता के आधार पर उपयुक्त किस्मों का चयन करें और विश्वसनीय स्रोतों से प्रमाणित बीजों का उपयोग करें।

सामान्य सुझाव

- ✓ अपने क्षेत्र और स्थिति के लिए सर्वोत्तम उपयुक्त किस्म चुनें।
- ✓ कंबाइन से काटी गई धान के खेत में, फसल अवशेषों की उपस्थिति में हैप्पी सीडर या स्मार्ट सीडर का उपयोग कर के सीधे गेहूँ की बुवाई की जा सकती है।
- ✓ गेहूँ की फसल में परिपक्वता के आसपास गर्मी के प्रतिकूल प्रभावों के कारण उपज के नुकसान से बचने के लिए समय पर बुवाई करें और बुआई में देरी से बचें।
- ✓ रोग की संवेदनशीलता के जोखिम से बचने के लिए अन्य क्षेत्रों की किस्में न उगाएं।
- ✓ अधिकतम उपज के लिए अपनी फसल को इष्टतम इनपुट (उर्वरक, सिंचाई जल, शाकनाशी और कवकनाशी) के साथ प्रबंधित करें।
- ✓ पानी बचाने और लागत में कटौती के लिए खेतों की समय पर और विवेकपूर्ण सिंचाई करें।
- ✓ सर्वोत्तम पोषक तत्व प्रबंधन के लिए बुवाई से पहले मृदा परीक्षण करने की अनुशंसा की जाती है।
- ✓ पराली न जलाएँ, क्योंकि इससे पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता है और मृदा स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

उत्तर, पूर्व, मध्य एवं दक्षिण भारत में अगेती और समय पर बुवाई के लिए गेहूँ की किस्में

क्षेत्र	उत्पादन परिस्थितियाँ	किस्म
अगेती बुवाई की किस्में		
उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र (उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र): पंजाब, हरियाणा, उत्तरी राजस्थान का कुछ भाग, पश्चिमी उत्तर प्रदेश	सिंचित, अगेती बुवाई नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक	डीबीडब्लू 187, डीबीडब्लू 303, डब्लूएच 1270, डीबीडब्लू 327, डीबीडब्लू 332, पीबीडब्लू 872, डीबीडब्लू 370, डीबीडब्लू 371, डीबीडब्लू 372
मध्य क्षेत्र : मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान (उदयपुर एवं कोटा)		डीबीडब्लू 187, डीबीडब्लू 303, डीबीडब्लू 327, डीबीडब्लू 445, जेडब्लू 1399 (एमपी 1399), पीबीडब्लू 906, एचडी 3463, जीडब्लू 543
समय पर बुवाई की किस्में		
उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र (उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र): पंजाब, हरियाणा, उत्तरी राजस्थान का कुछ भाग, पश्चिमी उत्तर प्रदेश	सिंचित, समय पर बुवाई 20 नवम्बर तक	निकरा पूसा व्हीट 3471 (एचडी 3471), डीबीडब्लू 187, डीबीडब्लू 222, एचडी 3406, एचडी 3386, पीबीडब्लू 826, एचडी 3226, एचडी 3086, डब्लूएच 1105
उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र (उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र): पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, झारखंड		डीबीडब्लू 187, पीबीडब्लू 826, एचडी 3411, डीबीडब्लू 222, एचडी 3086, के 1006, पीबीडब्लू 915, डीबीडब्लू 386
मध्य क्षेत्र (मध्य क्षेत्र): मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान (उदयपुर एवं कोटा)		डीबीडब्लू 187, एचआई 1636, एचआई 1669, एमएसीएस 6768, जीडब्लू 366, जीडब्लू 555 (सोरठ अम्बर), एमएसीएस 6837 (एमएसीएस विन्ध्या), एचआई 1683, एचआई 8850 (डी), एमएसीएस 4135(डी)
प्रायद्वीपीय क्षेत्र (प्रायद्वीपीय क्षेत्र): महाराष्ट्र, कर्नाटक		डीबीडब्लू 168, एमएसीएस 6478, यूएस 304, एमएसीएस 6222, पीबीडब्लू 891, एचआई 8849(डी), एमएसीएस 4135(डी), एकेएडब्लू 5100, डीबीडब्लू 443, एनडब्लूएस 2222, डब्लूएच 1306

बुवाई का समय, बीज दर एवं उर्वरक प्रयोग: भारत में गेहूँ की खेती विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों और उत्पादन परिस्थितियों में की जाती है। यूरिया का प्रयोग सिंचाई से ठीक पहले करें।

गेहूँ की फसल के लिए क्षेत्रवार बीज दर एवं उर्वरक मात्रा

क्षेत्र	बुवाई की परिस्थितियाँ	बीज दर	उर्वरक की मात्रा एवं प्रयोग का समय
उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र	सिंचित, समय पर बुवाई	100 किग्रा/हेक्टेयर	150:60:40 किग्रा नत्रजन-फॉस्फोरस-पोटाश/हेक्टेयर (एक-तिहाई नत्रजन तथा फॉस्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय बेसल (आधार) खाद के रूप में दें। शेष नत्रजन पहली और दूसरी सिंचाई पर दो समान भागों में दें।)
मध्य क्षेत्र एवं प्रायद्वीपीय क्षेत्र	सिंचित, समय पर बुवाई	100 किग्रा/हेक्टेयर	120:60:40 किग्रा नत्रजन-फॉस्फोरस-पोटाश/हेक्टेयर (एक-तिहाई नत्रजन तथा फॉस्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय बेसल (आधार) खाद के रूप में दें। शेष नत्रजन पहली और दूसरी सिंचाई पर दो समान भागों में दें।)

खरपतवार प्रबंधन (खरपतवारनाशी का छिड़काव)

- विभिन्न प्रकार के खरपतवारों, जिनमें अनेक खरपतवारनाशियों के प्रति प्रतिरोधी गुल्ली-डंडा (फैलेरिस माइनर) भी शामिल है, के नियंत्रण के लिए बुवाई के 0-3 दिन के भीतर पायरोक्सासल्फोन 85 डब्ल्यूजी की 60 ग्राम प्रति एकड़ मात्रा अकेले या पैंटीमेथालिन 30 ईसी की 2.0 लीटर प्रति एकड़ मात्रा के साथ छिड़कें। इसके विकल्प के रूप में एक्लोनिकेन + डिफ्लुफेनिकेन + पायरोक्सासल्फोन (मैटेनो मोर) के तैयार मिश्रण की 800 मिलीलीटर प्रति एकड़ मात्रा को 150-200 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के 0-3 दिन के भीतर छिड़कें।
- किसान साफ मौसम में ही छिड़काव करें, अर्थात् बारिश, कोहरा या ओस नहीं होनी चाहिए।

भारत में अगेती एवं समय पर बुवाई के लिए जौ की किस्में

क्षेत्र	उत्पादन परिस्थितियाँ	किस्म
उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र, जिसमें शामिल हैं हिमाचल प्रदेश (ऊना और पांवटा घाटी को छोड़कर); उत्तराखंड (तराई क्षेत्र को छोड़कर); जम्मू-कश्मीर के पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र (जम्मू और कठुआ जिलों को छोड़कर); असम; मणिपुर; मिजोरम; मेघालय; त्रिपुरा; नागालैंड; अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम	वर्षा आधारित (15 अक्टूबर से 10 नवम्बर)	चारा जौ: बीएचएस 400, एचबीएल 113, वीएलबी 118 बिना छिलके वाला जौ: बीएचएस 352, बीएचएस 497, दोहरी उपयोगिता वाला जौ: बीएचएस 380
उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र (उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र) जिसमें राज्य शामिल हैं: पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर संभागों को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झाँसी संभाग को छोड़कर, जम्मू-कश्मीर के कुछ भाग (जम्मू और कठुआ जिले), हिमाचल प्रदेश के कुछ भाग (ऊना जिला और पांवटा घाटी) और उत्तराखंड (तराई क्षेत्र)	सिंचित समय पर बुवाई (10-25 नवम्बर)	चारा जौ: डीडब्लूआरबी 137, बीएचएस 946 बिना छिलके वाला जौ: पीएल 891, डीडब्लूआरबी 223 दोहरी उपयोगिता वाला जौ: आरडी 2715, आरडी 2552 माल्ट जौ: डीडब्लूआरबी 219, डीडब्लूआरबी 52, आरडी 2849, डीडब्लूआरबी 123, डीडब्लूआरबी 101, डीडब्लूआरबी 182
उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र जिसमें राज्य शामिल हैं: पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असम और पूर्वोत्तर राज्यों के मैदानी क्षेत्र	सिंचित समय पर बुवाई (10-25 नवम्बर)	चारा जौ: डीडब्लूआरबी 137, एचयूबी 113 बिना छिलके वाला जौ: के 1149, एनडीबी 943 दोहरी उपयोगिता वाला जौ: आरडी 2715, आरडी 2552
	वर्षा आधारित (20 अक्टूबर से 10 नवम्बर)	चारा जौ: के 603, लखन
मध्य क्षेत्र, जिसमें राज्य शामिल हैं: मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान (कोटा और उदयपुर संभाग) और उत्तर प्रदेश का झाँसी संभाग		चारा जौ: डीडब्लूआरबी 137, आरडी 2899 बिना छिलके वाला जौ: पीएल 891, डीडब्लूआरबी 223 दोहरी उपयोगिता वाला जौ: : आरडी 2715, आरडी 2552

उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र & उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र	लवणता एवं क्षारीयता (10-25 नवम्बर)	चारा जौ: एनडीबी1173, आरडी 2794, आरडी 2907
--	------------------------------------	---

जौ के लिए बीजोपचार संबंधी सुझाव

कीट/रोग	उपचार
दीमक	150 मिलीलीटर क्लोरपायरीफॉस (20 ईसी) को 5 लीटर पानी में घोलें और इस घोल से 100 किलोग्राम बीज का उपचार करें।
आवृत कंड रोग	थिरम को बाविस्टिन/विटैवैक्स के साथ 1:1 के अनुपात में मिलाकर 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें। वैकल्पिक रूप से, टेबुकोनाज़ोल का प्रयोग 2.0 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से करें।
जैव उर्वरक	बीजोपचार के लिए एजोटोबैक्टर + पीएसबी का 10-20 मिलीलीटर प्रति किलोग्राम बीज की दर से प्रयोग करने की भी सिफारिश की जाती है।

जौ की फसल के लिए क्षेत्रवार बीज दर एवं उर्वरक मात्रा

क्षेत्र	बुवाई की परिस्थितियाँ	बीज दर	उर्वरक की मात्रा एवं प्रयोग का समय
उत्तर-पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्र	सिंचित, समय पर बुवाई	100 किग्रा/हेक्टेयर	चारा एवं बिना छिलके वाले जौ के लिए 60:30:20 किग्रा नत्रजन-फॉस्फोरस-पोटाश/हेक्टेयर दें माल्ट जौ के लिए 90:30:20 किग्रा नत्रजन-फॉस्फोरस-पोटाश/हेक्टेयर दें (आधी नत्रजन तथा फॉस्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय बेसल (आधार) खाद के रूप में दें। शेष आधी नत्रजन पहली सिंचाई पर दें।)
मध्य क्षेत्र एवं प्रायद्वीपीय क्षेत्र	सिंचित, समय पर बुवाई	100 किग्रा/हेक्टेयर	चारा एवं बिना छिलके वाले जौ के लिए 60:30:20 किग्रा नत्रजन-फॉस्फोरस-पोटाश/हेक्टेयर दें (आधी नत्रजन तथा फॉस्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय बेसल (आधार) खाद के रूप में दें। शेष आधी नत्रजन पहली सिंचाई पर दें।)

जौ में खरपतवार प्रबंधन (खरपतवारनाशी का छिड़काव)

- विभिन्न प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रण हेतु बुवाई के 0-3 दिन के भीतर पेंडीमेथालिन 30 ईसी की 1.5-2.0 लीटर/एकड़ मात्रा का 150-200 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।


 (ओमकार सिंह)
 निदेशक (क)